उपसंहार

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

उपसंहार

श्रीलाल शुक्ल जी बहुमुखी प्रतिमा से संपन्न साहित्यकार हैं । उन्होंने अपनी रचना में बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन हमें करा दिया हैं । 'बिस्रामपुर का संत' यह उनका बीसवीं सदी के अंतिम दशक का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है । 'बिस्रामपुर का संत' भूदान-आंदोलन की पृष्ठभूमि पर आधारित यह एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज की आस्थाओं, विघटनामुखी जीवनदर्शी स्थितियों, बढ़ती हुई अनैतिक मनोवृत्तियों बदलते हुए परिप्रेक्ष्यों में उभरते खंडित चरित्रों की समर्थ भावनाओं का प्रभावशाली चरित्रांकन इस उपन्यास में हुआ है ।

इस आलोच्य उपन्यास 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास का वस्तुगत विवेचन इस लघु शोध-प्रबंध में किया गया है । इस उपन्यास की कथा 'बिस्रामपुर का संत' के आस-पास ही घुमती है । उपन्यास में भूदान आंदोलन की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर तथा बिस्रामपुर नामक गाँव को केंद्र में रखकर विविध ग्रामीण सामाजिक समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए राजनीतिक नेताओं की पाखंडी, ढोंगी वृत्ति को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ।

'बिस्रामपुर का संत' में पुरानी और नई पीढ़ी के बीच संघर्ष कुँवर साहब और विवेक के माध्यम से स्पष्ट किया है । उपन्यास की कथावस्तु के केंद्र में कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह हैं । सारी गौण कथाएँ एवं बाकी सारे पात्र उन्हीं को केंद्र में रखकर उपन्यास की कथावस्तुओं में समाविष्ठ हुए हैं ।

इस उपन्यास की कथावस्तु में कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह के माध्यम से राजनीतिक नेताओं पर व्यंग्य किया गया है । भूदान आंदोलन के पीछे की तथा जमींदारों की उदारता की खिल्ली उड़ाई है । भूदान आंदोलन की सफलता-असफलता पर भी श्रीलाल शुक्ल ने गहराई से चिंतन किया है । भूदान की आड में तत्कालीन युग के जमींदारों ने अपना उल्लू सीधा कैसे किया, आश्रम व्यवस्था और सहकारी संस्थाओं को बढ़ावा कैसे दिया इसे भी यहाँ स्पष्ट कर

दिया है । कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह को 'बिस्रामपुर का संत' कहकर आधुनिक राजनीतिक संतों की खिल्ली उड़ाने का प्रभावी काम किया है । 'बिस्रामपुर का संत' में राजनीतिक नेताओं के प्रश्रय में पले भ्रष्टाचार को निर्मल के माध्यम से प्रस्तुत किया है । निर्मल की पत्नी सुशीला इस उपन्यास का एक ऐसा पात्र है, जो भ्रष्टाचार का विरोध ही नहीं करती बल्कि भ्रष्टाचारी पति को त्यागने का प्रशंसनीय काम भी करती है । अत: जयंतीप्रसाद के माध्यम से राजनीतिक में पनपनेवाली अनीति पर भी प्रकाश डाला गया है ।

अत: सामंतवादी-पूँजीवादी संस्कारों और व्यवस्था के बीच-छुटते हुए समाज की विसंगतियों और दुरावस्थाओं को समाज के सामने प्रक्षेपित करना और समाज को इन बातों से जागृत करना ही प्रस्तुत उपन्यास की कथा का प्रयोजन है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में विभिन्न स्तर के पात्र हैं । 'बिस्रामपुर का संत' ग्रामीण सामाजिक उपन्यास होने के कारण इसमें अनेक स्तर के पात्र हैं । कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह उपन्यास का प्रमुख तथा नायक भी हैं । उनके चरित्र में अनीति के तथा उपयोगितावादी दर्शन की प्रधानता है । उनकी वाग्देवी अत्यंत ही प्रखर व प्रचंड हैं । वे छद्म आदर्शों के बाह्य आडंबरों तथा अभ्यंतर में कुटिलताओं की प्रतिमूर्ति हैं, अत: निसंदेह रूप से आज के नेता वर्ग के वे प्रभावशाली प्रतीक हैं ।

'बिस्रामपुर का संत' में पात्रों की विविधता और विपुलता है । अनेक स्तर के, अनेक प्रवृत्तियों के, अनेक प्रकार की उम्र के पात्र उपन्यास में प्रस्तुत हुए हैं । लेखक ने इन पात्रों के द्वारा नई और पुरानी पीढ़ी के अंतर को स्पष्ट किया है ।

शुक्ल जी ने 'बिस्रामपुर का संत' को सामने रखकर वर्तमानकालीन भारत की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में प्राप्त विषमताओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है । अत: उनका उद्देश्य इन विषमताओं पर व्यंग्य करना है इसलिए शुक्ल जी ने पात्रों के बाह्य

रूप पर अधिक जोर न देकर उनके अंतरंग में गुण-दोषों का सफल चित्रण किया है । चरित्र के विशेषताओं के अंतर्गत उनके व्यक्तित्व और बौद्धिक गुणों को स्पष्ट किया है ।

पात्रों के माध्यम से उपनप्यासकार ने परिवेश की स्थिति और गति को भी स्पष्ट किया है । कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह के माध्यम से राजनीतिक नेताओं के चरित्र की पोल खोलने का प्रयत्न किया है । ये सभी पात्र अपनी-अपनी अलग-अलग कथा को लेकर मुख कथा के साथ जुड़े हुए हैं । ये सारे पात्र परिवेश की उपज लगते हैं । वे खुद अपनी लड़ाई लड़ते हैं ।

इस उपन्यास के स्त्री पात्र परिस्थिति की उपज होकर भी परिवेश से संघर्ष करते-करते संतुलन बनाए रखते हैं । नारी पात्र समझौतशील, सोच-विचार करनेवाले और परिस्थिति पर गंभीरता से चिंतन करनेवाले लगते हैं । उपन्यास के गौण पात्र कथावस्तु को गतिशील बनाने के लिए योगदान निभाते हैं ।

अत: पात्र और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास सफल है । 'संत' शब्द में व्यंग्य का निर्वाह करके कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह के चरित्र की पोल खोलने का प्रयत्न किया है ।

इस उपन्यास में परिवेशानुकूल वातावरण को ढालने का प्रयत्न किया है । 'बिस्रामपुर का संत' में देशकाल वातावरण का चित्रण कथावस्तु और पात्रों के अनुरूप ही किया है । विविध घटनाओं को लेकर, 'बिस्रामपुर' गाँव को केंद्र में रखकर, अनेक स्तरों के पात्रों को लेकर वातावरण की निर्मिति करके वर्तमानकालीन स्थिति को वातावरण के रूप में उभर लिया है ।

उपन्यास में राजनीतिक नेताओं के अलिशान महल का, उनकी शान-शौकत का या ऐशो-आरामी जिंदगी का वातावरण सूक्ष्मता से चित्रित किया है । राजनीतिक भ्रष्टाचार का, गुंडई का, जनसामान्य किसानों के शोषण का वातावरण प्रस्तुत उपन्यास के दूवारा पाठकों के सामने यथार्थ ग्रामीण वातावरण चित्रित किया है ।

कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह, निर्मल, सुंदरी तथा विवेक के चारित्रिक विकास के द्वारा लेखक ने वातावरण की महत्ता की व्यंजना की है । अतः पर्यावरण व्यक्ति का ही नहीं राष्ट्र का भी भाग्य-निर्माता होता है यह स्पष्ट करके शुक्ल जी ने वातावरण का निर्वाह करने की कोशिश की है ।

प्रस्तुत उपन्यास 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास की भाषा-शैली प्रभावी बन बैठी है । शुक्ल जी ने पात्रानुकूल परिवेशानुकूल उपन्यास की भाषा को गढ़ा और सँवारा है ।

पात्रों की मानसिकता, टूटन और बिखराव के अनुसार अलग-अलग वाक्यों का प्रयोग हुआ है । परिस्थिति के अनुसार विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया है । साथ ही विदेशी भाषा के अंतर्गत अरबी, फारसी शब्दों का प्रयोग किया है तथा अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी खुलकर किया है । मुहावरों का प्रयोग करके भाषा को प्रभावी बनाया है ।

भाषा के साथ कथावस्तु को प्रभावशाली बनाने के लिए, प्रसंग के अनुसार अनेक शैलियों का भी प्रयोग किया है । वर्णनात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, स्वप्नविश्लेषनात्मक शैली, नाटकीय शैली, फ्लॅश बॅक शैली तथा दृश्य शैली ।

अतः 'बिस्रामपुर का संत' में भाषा-शैली का सुंदर समायोजन हुआ है और लेखक को भी सफलता मिली है । भाषा शैली पात्रानुकूल है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में ग्रामांचल की जातिभेद की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, राजनीतिक नेताओं के कुटनीति की समस्या, निम्न जाति के लोगों के शोषण की समस्या, अकेलेपन की समस्या, असफल प्रेम की समस्या, मूल्य टूटन की समस्या, नशापान की समस्या, गुंडई की समस्या, जमींदारी शोषण की समस्या, भूमि वितरण की समस्या, अवैध-यौन संबंधों की समस्या, आर्थिक समस्या तथा असफल दांपत्य जीवन की समस्या आदि समस्याओं का निर्वाह करके उपन्यासकार ने ग्रामांचलों के जनजीवन की स्थिति और गति को विशद किया

है । ये समस्याएँ आम ग्रामों की हैं, जिसमें राजनीति ने प्रवेश किया है । राजनीति के प्रवेश के कारण ग्राम जीवन में बदलावजन्य अनेक नई समस्याओं के दर्शन हो रहे हैं । यौन-संबंधों ने, नया रूप धारण किया है, भ्रष्टाचार के नये-नये आयाम उभारने लगे हैं, राजनीति का गुनहगारीकरण होता जा रहा है । सहकार के नाम पर ग्रामों में हडपनीति के दर्शन हो रहे हैं, अंतिम दशक के इस हिंदी उपन्यासों में चित्रित सभी समस्याएँ समकालीन युगबोध को साकार करती हैं ।